Vol 5 Issue 9 June 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue -9 | June - 2016

Review Of Research

अवतारवाद की परिकल्पना में ऐतिहासिक तथ्य

आयशा फ़ातमी
सहायक प्रोफेसर– प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व नारी शिक्षा निकेतन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ.

प्रस्तावना –

इतिहास लेखन की उत्पत्ति अकस्मात नहीं होती है। इसमें किसी न किसी प्रकार के दार्शनिक दृष्टिकोण अथवा विचार की आवश्यकता होती है। दर्शन का प्रमुख कार्य अन्ततः मानव अस्तित्व के रहस्यों का समाधान तथा तदनन्तर मनुष्य की नियति को सुनिश्चित करना है। भारतीय दर्शन में 'अवतारवाद' की अवधारणा के उदय की पृष्ठभूमि में इसी तर्क को देखा जा सकता है। यद्यपि अवतारवाद की परिकल्पना शुद्धतः दार्शनिक तथा धार्मिक है किन्तु इसने पूर्ववर्ती, समसामयिक तथा परवर्ती कालों के इतिहास तथा इतिहास लेखन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य अवतारवाद की परिकल्पना में ऐतिहासिक तथ्यों को खोजना है।

महत्वपूर्ण शब्द– इतिहास लेखन, दर्शन, अवतारवाद, ऐतिहासिक तथ्य

प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन के प्रति विद्वानों में मतैक्य नहीं है किन्तु यह सत्य है कि इतिहास जिस रूप में आज परिभाषित किया जाता है उस रूप में भारतीयों ने इतिहास रचना नहीं की। वस्तुतः भारतीयों ने केवल ज्ञान प्राप्ति के लिये इतिहास के तथ्यों का संकलन नहीं किया अपितु अतीत की स्मृतियों को सुरक्षित रखने के लिये इसे धार्मिक मूल्यों के अधीन रखा। इसीलिये भारत में धार्मिक साहित्य की एक सुदीर्घ परम्परा मिलती है जिनसे हम इतिहास को प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन की परम्परा में मुख्य रूप से धार्मिक कथाएं, पुराण, शासन वंशीय प्रलेख, जीवन चरित्र तथा इतिवृत्त आदि[1] को सम्मिलित किया जा सकता है। इसी परम्परा में रामायण तथा महाभारत दो महाकाव्य भी सम्मिलित हैं।

इस प्रकार वैदिक काल से ही साहित्य सृजन परम्परा अस्तित्व में आ चुकी थी और इनकी विविध ऐतिहासिक रचना विधाओं से लेकर कालान्तर में विभिन्न ऐतिहासिक प्रवृत्तियों का जन्म हुआ। ये साहित्य संपदा न केवल धार्मिक, दार्शनिक तथा आध्यात्मिक विचारों से अवगत् कराती हैं अपितु समसामयिक जीवन के विविध पक्षों का चित्रण भी करती हैं जो इतिहासकार का प्रमुख अध्ययन विषय होता है।

इतिहास लेखन की उत्पत्ति अकस्मात नहीं होती है। इसमें किसी न किसी प्रकार के दार्शनिक दृष्टिकोण अथवा विचार की आवश्यकता होती है। दर्शन का प्रमुख कार्य अन्ततः मानव अस्तित्व के रहस्यों का समाधान तथा तदनन्तर मनुष्य की नियति को सुनिश्चित करना है। अतः कहा जा सकता है कि इतिहास दर्शन में मानव जीवन की प्रक्रिया पर एक चिन्तन–शील विमर्श होता है।[2] हिन्दी भाषा में प्रयुक्त 'दर्शन' शब्द दृश धातु से बना है जिसका अर्थ है 'देखना' ।3 चारों ओर के वातावरण के विषय में गहन चिंतन, तर्क, अन्वेषण आदि को दर्शन के क्षेत्र में रखा जा सकता है।

वेदों में प्रतिपादित जीवन दर्शन के जिन छः महत्वपूर्ण दर्शन को प्राचीन भारतीय मनीषियों द्वारा प्रस्तुत किया गया है वे निम्न हैं–

1.महर्षि कपिल का सांख्य दर्शन
2. महर्षि पतंजलि का योग दर्शन
4 महर्षि कणाद का वैशेषिक दर्शन
5 महर्षि जैमिनी का पूर्व मीमांसा दर्शन

3. महर्षि गौतम का न्याय दर्शन 6. महर्षि वेद व्यास का उत्तर मीमांसा(वेदान्त) दर्शन

इन्हें षड्दर्शन भी कहते हैं। इनके अतिरिक्त जैन, बौद्ध और चार्वाक दर्शन का भी वर्णन विभिन्न पुराणों[4] में हुआ है।

यह सत्य है कि इतिहास का निर्माण किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं होता। प्रत्येक युग तथा समाज में इतिहास निर्माण कुछ विशेष व्यक्तियों द्वारा होता है जिन्हें ऐतिहासिक शब्दावली में 'महान व्यक्ति' अथवा 'जननायक' की संज्ञा दी जा सकती है। भारतीय दर्शन में 'अवतारवाद' की अवधारणा के उदय की पृष्ठभूमि में इसी तर्क को देखा जा सकता है।[5] यद्यपि अवतारवाद की परिकल्पना शुद्धतः दार्शनिक तथा धार्मिक है किन्तु इसने पूर्ववर्ती, समसामयिक तथा परवर्ती कालों के इतिहास तथा इतिहास लेखन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है।

अवतारवाद की कल्पना विश्व के कई देशों में है किन्तु भारत में ये अत्यधिक बलवती है। भारत में अवतारों की कथा अत्यन्त अद्भुद, एवं रहस्यमयी मानी गयी है। अवतारवाद के सिद्धान्त की सर्वाधिक सुंदर व्याख्या गीता में मिलती है––

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम्
परिश्राणाम साधूना विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे[6]

इसके अनुसार जब जब संसार पर किसी प्रकार का कष्ट होता है, धर्म की हानि हो जाती है और धरती दुर्जनों से पीड़ित हो जाती है तब विश्वरूप सर्वात्मा संसार का हित करने के लिये अपने शुद्ध सत्वांश से धरती पर अवतरित होकर पृथ्वी पर धर्म की स्थापना करते हैं। भारतीय चिंतना के अनुसार ईश्वर का अंश प्रत्येक जीव में रहता है किन्तु अवतारों में ये तत्व अपेक्षाकृत अधिक होता है। ये अवतार(महान व्यक्ति) समसामयिक अपेक्षाओं को भली भाँति समझते हैं तथा तदनुरूप कार्य करते हुए इतिहास प्रक्रिया को गति प्रदान करते हैं। विद्वानों(इतिहास दार्शनिकों) का एक वर्ग मानता है कि ये 'महान व्यक्ति' इतिहास सृष्टा होते हैं।[7]

यद्यपि भारतीय धर्म तथा दर्शन में अनेक देवी–देवताओं के अवतारों को स्वीकृत किया गया है किन्तु अवतारवाद की मान्यता वैष्णव धर्म में सर्वाधिक है। विष्णु क्रियात्मक देव माने गये हैं[8] इसलिये कालान्तर में इनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। जो अवतारवाद पूर्व में ब्रह्म के माने जाते थे, वे कालान्तर में विष्णु के माने जाने लगे।[9] यहाँ तक कि समस्त धार्मिक, राजनीतिक तथा सामाजिक आन्दोलनों का संबंध भी इन्हीं अवतारों से जोड़ दिया गया। विष्णु के अनेक अवतारों की कल्पना की गयी है किन्तु 'दशावतार' ही मुख्यतः मान्य हैं–– मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, एवं कल्कि। पुलासकर महोदय ने इन दशावतारों को तीन भागों[10] में विभक्त किया है––

1.धार्मिक अवतार– मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन
2.ऐतिहासिक अवतार– परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध
3.भविष्य के अवतार– कल्कि

उक्त विद्वान ने दशावतार का संबंध मानव के क्रमिक इतिहास से बताया है। इनके अनुसार मत्स्यावतार मानव की प्रारंभिक अवस्था का, कूर्म तथा वराह अर्द्ध विकसित अवस्था का द्योतक है। नृसिंह तथा वामन अवतारों को गुफ़ाओं तथा जंगलों में रहने वाली असभ्य तथा अर्द्धसभ्य जातियों का प्रतीक माना है। परशुराम यत्र–तत्र विचरण करने वाली ख़ानाबदोशी एवं शिकारी जातियों के प्रतीक हैं। राम तथा कृष्ण अवतार नगर में रहने वाली सभ्य एवं पूर्ण विकसित अवस्था का द्योतक हैं।[11]

पुलासकर महोदय का यह दृष्टिकोण वैज्ञानिक दृष्टि से भी सत्य है। इन दशावतारों से सृष्टि की उत्पत्ति तथा विकास के क्रम का ज्ञान होता है। सृष्टि में सर्वप्रथम जल उत्पन्न हुआ और जल में मत्स्य, कूर्मादि जलचर हुए। विष्णु के मत्स्य तथा कूर्म अवतार उसी जलमग्ना सृष्टि को व्यक्त करते हैं। जल के मध्य से पृथ्वी निकली और उस पर घास फूस तथा अनेक पशु उत्पन्न हुए जिनमें वराह सिंह आदि हैं। शनैः शनैः मानव सत्ता का आविर्भाव हुआ किन्तु उसकी प्रवृत्ति पाशविक ही रही। विष्णु का नृसिंह अवतार मानवी तथा पाशवी प्रवृत्तियों का सम्मिश्रण है। मनुष्य में शीघ्र चेतना जाग्रत हुई। वह वन में रहकर जंगली जीवों की हिंसा कर उदरपूर्ति करता और युद्ध तथा वध द्वारा अपना अधिकार स्थापित करने लगा। वामन तथा परशुराम अवतार इन्हीं रूपों को प्रकट करते हैं। तत्पश्चात व्यक्तियों का सामाजिक विकास हुआ और वे पूर्णतः सभ्य होकर सुसंस्कृत समाज में रहने लगे। राम और कृष्ण उसी जीवन के उदाहरण हैं।[12] इस प्रकार विष्णु मनुष्य, पशु–पक्षी, ऋषि,देवता आदि के रूप में अवतरित होकर विश्व के द्रोहियों का संहार करते हैं। प्रत्येक युग में धर्म की रक्षा करते हैं।

दशावतारों में अधिकांशतः ऐसे अवतार हैं जो किसी न किसी पुराण के नायक हैं। उदाहरणार्थ मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, नृसिंह इन सभी का अपना पुराण है। राम तथा कृष्ण रामायण तथा महाभारत महाकाव्यों के नेता हैं फिर भी इनका विष्णु तथा भागवत पुराणों में विस्तृत वर्णन मिलता है। बुद्ध तथा कल्कि का भी विभिन्न पुराणों[13] में वर्णन मिलता है।

धार्मिक अवतारों की अपेक्षा भारतीय इतिहास तथा इतिहास लेखन की दृष्टि से राम, कृष्ण, बुद्ध एवं कल्कि के अवतार अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं। धार्मिक अवतारों में आस्था, श्रद्धा एवं अंधविश्वास का समावेश अधिक है जबकि ऐतिहासिक अवतारों का अध्ययन तत्कालीन धार्मिक दशा के अतिरिक्त सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक दशा के ज्ञान हेतु अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

वस्तुतः आज के विश्व में मात्र भारतीय जाति की ऐसा अंतिम समुदाय है, जिसकी संस्कृति, समयबोध एवं दर्शन चिंतना आज के कोटि–कोटि लोगों की जीवन मर्यादा को अनुशासित करती है। निश्चित रूप से यह तथ्य हमारे इतिहास ग्रन्थों रामायण (जिसके नायक श्री राम हैं) तथा महाभारत (जिसके नायक श्री कृष्ण हैं) की पृष्ठभूमि एवं जनजीवन के संबंधों को व्यक्त करते हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य के अत्यन्त लोकप्रिय ये दोनों महाकाव्य भले ही दार्शनिक एवं वैदिक हिन्दू धर्म की प्रस्तुति करने वाले ग्रन्थ हों तथापि ये महान पुरातन आर्य हिन्दू

धर्म के इतिहास ग्रन्थ हैं जो हिन्दू सभ्यता तथा संस्कृति के आधार स्तम्भ माने जाते हैं।

महर्षि बाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' में आदिकवि ने श्रीराम कथा वर्णन के साथ नैतिक आदर्शों, धर्म, सदाचार आदि का विशद विवरण प्रस्तुत किया है। रामायण आर्य संस्कृति की आधारशिला है और भारतीय मनीषा ने रामराज्य को सर्वदा सुराज का आदर्श माना है। रामायण में उन कोमल भावनाओं का चित्रण भी है जिसमें हमारा कौटुम्बिक जीवन ओत–प्रोत है। रामायण के महानायक राम धर्म का प्रतीक हैं और रावण अधर्म का।

रामायण इन्हीं श्रीराम तथा उनकी जीवनगाथा और तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक परिस्थितियों का चित्रण करने वाली आदिकवि 'बाल्मीकि' की 24000 श्लोकों 500 सर्गों, 100 उपाख्यानों एवं सात काण्डों (बाल अयोध्या, अरण्य किष्किंधा, सुंदर, युद्ध और उत्तर) में रचित ऐतिहासिक कृति है।[14]

वस्तुतः रामायण में राम के चरित्र को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में व्यक्त किया गया है। विभिन्न विकट परिस्थितियों के मध्य मनुष्य अपने शील की रक्षा किस प्रकार कर सकता है, यह आदि कवि ने रामायण के माध्यम से बताया है। इसमें मानव जाति को दुष्ट एवं पाश्विक शक्तियों को विजित करने वाला स्थापित किया गया है। रामायण में राजनीति, धर्मनीति, अर्थनीति, समाजनीति, युद्धनीति, नगर निर्माण विद्या, आध्यात्म विद्या, भौतिक विद्या आदि का रसात्मक प्रवाह है। रामायण कालीन शिक्षा व्यवस्था का भी पूरा ज्ञान इसमें मिलता है। उस समय वेदत्रयी, वार्ता (अर्थशास्त्र और सम्पत्तिशास्त्र) तथा दण्डनीति का पाठ्यक्रम आश्रमों में चलता था। इसे बाल्मीकि ने त्रिस्न विद्या[15] कहा है। स्त्री शिक्षा (शबरी, स्वंप्रभा, वेदवती, अहिल्या) का भी संकेत मिलता है।इस समय संयम, सदाचार, सत्य, दया, धर्मपरायणता की भावना का विकास शिक्षा का मूल लक्ष्य था।[16]

बाल्मीकि ने रामायण को पुरातन इतिहास[17] कहा है। राजनीतिक इतिवृत्त की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण कृति है। उनका काव्य विन्ध्य पर्वतमाला के दक्षिण में आर्यों के प्रसार का प्रथम प्रामाणिक विवेचन है। तत्कालीन आर्यों की प्रशासनिक संस्थाएं कैसी थी? राजतन्त्र का आदर्श क्या था? उसमें लोकतंत्रीय पुट कितना था, मन्त्रिमण्डल का गठन तथा केन्द्रीय एवं स्थानीय शासन का स्वरूप क्या था? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर यत्र–तत्र सांकेतिक अथवा विस्तार रूप में रामायण में मिलता है।

इस प्रकार आदिकवि ने श्रीरामावतार की कथा से तत्कालीन इतिहास तथा इतिहास लेखन को पूर्ण रूप से प्रभावित किया है। इस कारण यह धर्मग्रन्थ होने के साथ–साथ इतिहास ग्रन्थ की कोटि में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उल्लेख्य है कि श्रीराम कथा 'रामायण' विभिन्न रूपों में सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित है और सभी का रामाख्यान मूलतः बाल्मीकि रामायण ही है ,यद्यपि प्रकारान्तर में रामाख्यानों के कुछ प्रसंगों में परिवर्तन हो गया है किन्तु मूल व्याख्यान एक ही है। बाल्मीकि स्वयं कहते हैं " रस माधुर्यपूर्ण जो महाकाव्य इतिहास लिखा गया है, वह तब तक पृथ्वी पर प्रचारित रहेगा जब तक पर्वत स्थिर हैं, नदियाँ प्रवाहमान हैं।"[18] पाश्चात्य मनीषी सी० एम० वर्डवुड इस संबंध में कहते हैं "रामायण में एक नवीन छन्द और नवीन भाषा में मानों भारत के वर्तमान एवं अतीत के समस्त राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आदर्श पुंजीभूत हो गये हैं एवं उस समय तक जब तक वैदिक धर्म के अनुयायी हिन्दुओं का अस्तित्व विश्व में एक प्रथक धार्मिक इकाई के रूप में विद्यमान रहेगा, तब तक रामायण सर्वदा आर्य सभ्यता–संस्कृति की उज्जवलता को एवं उसकी सुगन्धि को चारो ओर प्रसारित करती रहेगी।"[19]

विष्णु का कृष्ण अवतार सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इनके सम्पूर्ण जीवन एवं अद्भुत लीलाओं का वर्णन वैष्णव पुराणों में हुआ है।[20] श्रीकृष्णावतार का ऐतिहासिक महत्व महाभारत में प्रतिपादित हुआ है।श्रीकृष्ण महाभारत महाकाव्य के महानायक हैं। महाभारत हिन्दुओं का सर्वाधिक महत्वपूर्ण इतिहास काव्य है जो पुरातन दो परिवारों कौरवों और पाडवों के बीच हुई महासमर की गाथा है। आद्य भारतीय मान्यतानुसार इस महाकाव्य का प्रणयन महर्षि वेदव्यास ने किया था जो कृष्ण के समकालीन थे। इसमें कुल 18 पर्व, 74000 काव्यछन्द एवं लम्बे गद्यभाग हैं और एक लाख श्लोक हैं।[21]

महाभारत उस संक्रमणकाल की गाथा है जब देश तथा समाज में निरंकुशता का प्रभुत्व बढ़ रहा था। सामाजिक मान्यताओं, नियमों आदि का उल्लंघन हो रहा था। तत्कालीन समाज में अनेक ऐसे वर्ग उदित हो गये थे जो अपनी परम्पराओं से पूर्णतः अनभिज्ञ थे। महाभारत में प्रत्येक मानवीय जिज्ञासा एवं समस्या का सटीक समाधान प्रस्तुत किया गया है।

महाभारत का आर्थिक एवं सामाजिक पक्ष सुस्पष्ट है। एक परिवार(कौरव) भाई (पाण्डव) का राज्य प्राप्त करने के लिये युद्धरत हो जाता है जबकि पाण्डव न चाहते हुए भी अपने अधिकार और क्षात्र धर्म की रक्षा के लिये युद्ध करने को विवश हैं। धर्म पाण्डवों के पक्ष में है और सत्य के प्रतीक कृष्ण भी उन्हीं के साथ हैं। कौरवों का नेतृत्व ईर्ष्यालु एवं अति महत्वाकांछी दुर्योधन के हाथों में है जो महामंत्री विदुर एवं पितामह भीष्म के सत्परामर्श की अवहेलना करते हुए पाण्डवों को उनका राज्य वापस नहीं देना चाहता। प्रारंभ में दोनों पक्ष पूर्व निर्धारित युद्ध के नियमों का पालन करते हैं। शनैः शनैः दुःशासन, शकुनि एवं अंगराज कर्ण के प्रोत्साहन पर मनोविकारों की वृद्धि होती हैं और पहले कौरव पक्ष नियमों को तिलांजलि दे देते हैं तदन्तर पाण्डव पक्ष भी नियमों का उल्लंघन करते हैं। किन्तु धर्म(स्वयं भगवान कृष्ण) उनके पक्ष में होने के कारण विजयश्री पाण्डवों को मिलती है।

भारतीयों के लिये महाभारत असीम एवं उत्तम धार्मिक एवं दार्शनिक मूल्य वाला महाग्रन्थ है। इसी का एक भाग 'श्रीमद्भगवद्गीता' है। इसमें श्रीकृष्णावतार के कुरुक्षेत्र की युद्ध भूमि में कौरवों–पाण्डवों की विशाल सेना के समक्ष मोहग्रस्त अर्जुन के मोह को भंग करने के लिये धर्म–आध्यात्म सांख्ययोग, कर्मयोग, भक्तियोग, उचित – अनुचित की विशद व्याख्या करने वाला उपदेशात्मक संदेश संकलित है। इस संदेश में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को क्षात्र धर्म का बोध कराते हुए अधार्मिक शक्तियों के विनाश के लिये प्रेरित किया। अर्जुन को अनिर्णीत अवस्था से मुक्ति दिलाकर अपने दायितव एवं कर्तव्य पथ का बोध कराकर अर्जुन को युद्ध में प्रवृत्त कर उनके 'कर्मयोग' का मार्ग प्रशस्त किया। कर्मसिद्धान्त गीता की सर्वप्रमुख देन है जो इस प्रकार गुंज्जित हुई है––

"कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सऽगोऽस्त्व कर्मणि"[22]

महाभारत में पुरुषार्थों एवं मानव के नैतिक पक्ष की पूर्ण विवेचना मिलती है। अन्ततः सत्य एवं प्रकाश के पक्ष को असत्य एवं अंधकार के पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। निसंदेह महाभारत से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जीवन में विद्वेष, विरोध भावना, ईर्ष्या, क्रोध द्वारा कभी सफ़लता नहीं मिल सकती। इसमें उन नैतिक बुराइयों को भी उजागर किया गया है जैसे द्यूत, अपहरण, बलात्कार, धोखा, छल–कपट आदि जिनसे मानव जाति का चारित्रिक पतन होता है। मानव सभ्यता के उत्थान पतन की विस्तृत गाथा महाभारत में है। यह एक सम्पूर्ण कृति है।

इस प्रकार भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं को भली भाँति समझने के लिये महाकाव्यद्वय से परिचित होना अति आवश्यक है क्योंकि एक तो वर्तमान में भी तत्कालीन संस्कृति न्यूनाधिक रूप में उपस्थित है दूसरे भारतीय सभ्यता संस्कृति राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन का जैसा सुंदर और सजीव वर्णन इनमें मिलता है वह अन्यत्र दुर्लभ है।ये इतिहास ग्रन्थ देश के भूगोल सांस्कृति एवं परिवर्तनशील ऋतुओं से भी परिचित कराते हैं। दोनो महाकाव्यों में वनवास प्रसंग (रामायण में राम को 14 वर्ष का वनवास तथा महाभारत में पाण्डवों को 13 वर्ष का अज्ञातवास) कथा का महत्वपूर्ण भाग है।[23] वस्तुतः मानव जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं जिसकी झाँकी इनमें न मिलती हो। इन महान ग्रन्थों में अवतारों की दार्शनिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत ऋषि मुनियों ने एतिहासिक घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया। इसी कारण कहा गया है कि शताब्दियाँ व्यतीत होने के बावजूद रामायण तथा महाभारत का पवित्र स्त्रोत नाम मात्र को भी नहीं सूखता।

वैदिक धर्म में हिंसा एवं अनैतिकता का समावेश हो जाने पर उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप अहिंसा मात्र के पुजारी बौद्ध धर्म ने समाज में प्रवेश किया। शनैः शनैः बौद्ध धर्म न केवल सम्पूर्ण भारत अपितु भारत के बाहर भी अनेक देशों में प्रसारित हुआ, किन्तु कालान्तर में बौद्ध धर्म भी अनैतिक आचरणों से अछूता न रहा ।फलतः इस धर्म की प्रतिक्रिया स्वरूप शनैः शनैः समाज में पौराणिक धर्म का पुनर्प्रवेश हुआ। समाज में विष्णु को अत्यधिक महत्व मिला और उनके अवतारों के मध्य बुद्ध की भी गणना होने लगी। अग्निपुराण[24] भविष्यपुराण,[25] लिंगपुराण,[26] वराहपुराण,[27] गरुड़पुराण[28] आदि में बुद्ध के विष्णु अवतार हाने के प्रमाण मिलते हैं। इनका गहन अध्ययन करने से यह तथ्य प्रकट होता है कि इनमें बुद्ध के चरित्र में विरोधाभास है। कहीं उनकी प्रशंसा तो कहीं उनमें दोष मढ़ने की प्रवृत्ति दिखायी देती है[29]। ऐसा प्रतीत होता है कि बुद्ध को ब्राह्मण धर्म ने मुक्ति (खाने–पीने) के लिये अपनाया गया था न कि युक्ति के लिये।[30] उनका बुद्ध नाममात्र का बुद्ध है, एक अवतार मात्र जिसके विषय में सामान्य ऐतिहासिक बातें भी प्रामाणिक नहीं है। इस संबन्ध में W.J.Wilkins का कथन उल्लेखनीय है–" ब्राह्मणवादियों और बौद्धों के मध्य जो कटु संघर्ष रहा है उसके मद्देनज़र हमें इस बात पर किसी तरह की हैरानी नहीं होनी चाहिये कि पुराणों में बुद्ध का पूरा विवरण नहीं मिलता और जो थोड़ा बहुत मिलता भी है वह बुद्ध को विकृत रूप में प्रस्तुत करता है।"[31] इनका ऐतिहासिक बुद्ध से कोई मेल नहीं है।

दशावतारों में दसवें अवतार कल्कि[32] की कल्पना की गयी है जिनका आगमन कलियुग में होने वाले अधर्म को समाप्त कर सत्युग की स्थापना के लिये होगा। कलियुग का पाप अधर्म(कल्क) एवं इस कल्क का विनाश करने वाला कल्कि है।[33] विष्णु पुराण के अनुसार कलि के अन्त में अव्यवस्था(विप्लव) को समाप्त करने के लिये विष्णु किसी ब्राह्मण परिवार में कल्कि का अवतार लेंगे और सभी म्लेच्छों, दस्युओं तथा दुराचारियों का नाश करके सबको पुनः अपने अपने धर्म में प्रतिष्ठित करेंगे।[34] अतः समाज की अस्थिरता, हिंसा, अधर्म आदि से मुक्ति के लिये अवतारवाद की कल्पना की गयी। जब–जब धर्म को अपने स्वार्थ के लिये प्रयोग किया जाता है तब परमब्रह्म मनुष्यों के कल्याण के लिये अवतार भेजते हैं। यह व्यवस्था सृष्टि में मनुष्य के साथ–साथ आरंभ हुई और अंतिम अवतार कल्कि पर समाप्त होती है।

भारतीय चिंतनधारा में अवतारवाद के सिद्धान्त में यदि हम धार्मिक परिच्छाया को हटा दें तो इन विविध अवतारों को हम महान व्यक्तियों की श्रेणी में रख सकते हैं जो समय समय पर उत्पन्न होकर समाज और परिवेश के अवांछनीय तत्वों को दूर कर उन्हें एक नया स्वरूप प्रदान करते हैं तथा इतिहास को गतिमान रखते हैं। परन्तु इतिहास दार्शनिकों का एक दूसरा वर्ग "महान व्यक्ति" की अवधारणा से संतुष्ट नहीं है। उनके अनुसार "कालजनित घटनाएं" अधिक महत्वपूर्ण होती हैं। किसी 'युग' तथा 'काल विशेष' की आवश्यकताओं तथा अपेक्षाओं के कारण ही इन 'महान व्यक्तियों' की उत्पत्ति होती है।[35]

वस्तुतः अवतारवाद के सिद्धान्त को इन दोनों विचारों के समन्वयात्मक रूप में समझना चाहिए। अवतार निश्चित प्रयोजन हेतु धरती पर प्रकट होते हैं किन्तु वे विश्व की सामान्य व्यवस्था से परे नहीं होते। यह सामान्य व्यवस्था परम सत्ता द्वारा उद्भूत होती है जिसे 'काल' कहा जाता है।[36] यह परम सत्ता सबकुछ चलायमान और गतिशील बनाये रखती है। 'काल' शब्द का मूल है 'कल' धातु जिसका अर्थ है– आंकलन करना, संगठन करना, गिनना अथवा पीछे से आगे की ओर लाना।[37] उसी 'कलन' से प्रचलित हुआ है 'कल' शब्द जो भूत तथा भविष्य दोनों के लिये प्रयुक्त होता है। भारतीय गणना में कल सतत गतिमान है। इसका आधार दार्शनिक था और इसे घटनाओं के सतत क्रम की गतिशीलता का बोधक माना गया। 'युगसिद्धान्त' की परिकल्पना इसी विचार परम्परा की देन है।

युग सिद्धान्त के अनुसार सत्, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग ये चार युग चक्रीय विकास क्रम में एक दूसरे का अनुगमन करते हैं।38 प्रत्येक युग को उसके अनिश्चित धर्म की स्थिति के आधार पर परिभाषित किया गया है। धर्म को एक गाय के रूप में परिकल्पित किया गया सत्युग में धर्म के चारो पद होते हैं। इस युग में किसी के मन में अधर्म का विचार नहीं उठा। यह युग शुद्ध आनंद और उल्लास का युग है। फिर इसमें कुछ दोष उत्पन्न हुए और त्रेता युग आया। इस युग में धर्म का एक पद लुप्त हो गया किन्तु फिर भी रामावतार द्वारा रामराज्य की स्थापना हुई। द्वापर युग में धर्म का एक और पद चला गया। इस युग में महाभारत का युद्ध हुआ और श्रीकृष्णावतार द्वारा गीत ज्ञान प्रदान किया गया। पारस्परिक सौहार्द का पतन होने के पश्चात् भी युधिष्ठिर के चरित्र को धर्मराज माना गया। धर्म के क्रमिक ह्रास के अंतिम चरण में कलियुग का प्रवेश होता है और तब धर्म का केवल एक पद रह जाता है।[39] कल्कि अवतार द्वारा कलियुग की समाप्ति के पुनः सत्युग की प्रतिष्ठा होती है। इसी प्रकार सृष्टि गतिमान रहती है।

ध्यातत्व है कि कलियुग में केवल धर्म का ह्रास बताया गया है। भौतिक सुखों के साधनों, वैज्ञानिक एवं यांत्रिक उपलब्धियों का नहीं, अपितु आवश्यकता से अधिक समृद्धि तथा सुख संसाधनों के प्रयोग ने धार्मिक, तथा नैतिक कर्मों के पालन में कठिनाई उत्पन्न की है। इसीलिये कालान्तर में नैतिक मूल्यों तथा धार्मिक विचारों का पतन हुआ है। वर्तमान परिस्थितियों में मनुष्य ने भौतिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में

अथाह उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं किन्तु इनके साथ ही विक्षोभ, असंतोषपूर्ण विनाश के भय से आक्रान्त भी है। यही स्थिति जो 'विरोधी' परिस्थितियों को उपस्थित करती है, अवतारवाद के अन्तर्गत युग सिद्धान्त की परिकल्पना का पोषण करती है। इस प्रकार अवतारवाद और 'विरोधी शक्ति' एक दूसरे के पूरक हैं।40 अवतारों (महान व्यक्तियों) का आगमन तभी होता है जब किसी काल विशेष में कोई विरोधी शक्ति अत्यन्त विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देती है। जब जब ये विरोधी शक्तियाँ अपना शीश उठाती हैं (राम के समय रावण, कृष्ण के समय कंस, कौरव आदि, बुद्ध के समय वैदिक सिद्धान्तों का पतन एवं भविष्य में कल्कि के समय सम्पूर्ण धर्म का विनाश आदि) तब तब अवतार विशेष प्रकट होते हैं और विरोधी अथवा दुष्ट शक्ति को उन्मूलित कर देते हैं। संभवामि युगे युगे.....इसी आशय को प्रकट करता है।

अवतारवाद की अवधारणा कहीं न कहीं सामान्यजन में भाग्यवादिता की प्रवृत्ति को जन्म देती है।41 इस प्रवृत्ति के कारण जनसामान्य अकर्मण्य होकर किसी त्राता की प्रतीक्षा करने लगता है तथा अपने कर्तव्यपथ से विमुख होने लगता है। भविष्य के अवतार कल्कि की प्रतीक्षा की पृष्ठभूमि में यही दृष्टिकोंण कार्यरत है। कल्कि अवतार वर्तमान युग की घोर निराशावादिता को दूर करने हेतु भविष्य में उपस्थित होंगे, ऐसी मान्यता है। इसके विपरीत अवतारवाद की परिकल्पना का सकारात्मक पक्ष भी है जो भारत वासियों को विभिन्न संकटों तथा विपत्तियों का सामना करने हेतु एक विशिष्ट जीवनशक्ति तथा आशावादिता प्रदान करता है। सामान्यतः संकट, विषम परिस्थितियाँ कुछ काल के लिये ही हैं, तत्पश्चात् आशा की किरण दैवीय शक्ति के रूप में प्राप्त हो जायेगी, ऐसा दृष्टिकोण भारतीयों में अवतारवाद के कारण ही है। यही दृष्टिकोण युग परिकल्पना का पोषण करता है। विषम अथवा विरोधी परिस्थितियाँ सदैव नहीं रहेंगी। वर्तमान में कलियुग के संघर्षों को भारतीय मूल्यों की पुनर्स्थापना द्वारा सत्युग में परिवर्तित किया जा सकता है। कल्कि अवतार की प्रतीक्षा इसी कारण है।

इस प्रकार उपरोक्त अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत में यद्यपि इतिहास लेखन की परम्परा विद्यमान थी तथापि उनकी दृष्टि घटनाओं की पूर्वापरकता और विवरणात्मक स्वरूप पर केन्द्रित न होकर उनके भीतर दिये गये संदेशों और नैतिक मूल्यों को उपस्थित करने और उन्हें स्थायित्व देने की ओर उन्मुख थी। भारतीयों की विशेष चिंता धर्म, दर्शन, साहित्य, संस्कृति और मानव जीवन को एक आदर्श जीवन पद्धति विरासत स्वरूप प्रदान करने पर केन्द्रित थी। भारतीय मनीषियों की अवतारवाद की अवधारणा ने सदैव ही सहनशील एवं आशावादी दृष्टिकोण रखते हुए सृष्टि को चलायमान रखने का संदेश दिया। कालगणना और युग सिद्धान्त की परिकल्पना में काल्पनिक और मिथकीय परम्परा का दोष मढ़ा जा सकता है किन्तु विश्व के लगभग सभी देशों के प्रारंभिक इतिहास लेखन में इतिहास और उनकी पुराकल्पनाएँ काल्पनिक और मिथकीय हैं। मिथक भी इतिहास का ही एक भाग होते हैं और मिथकों के बिना इतिहास की कल्पना करना दुष्कर है। इन मिथकों की पृष्ठभूमि में भी दार्शनिक दृष्टिकोण विद्यमान है।

संदर्भ–

1 . पाण्डे, गोविन्द चन्द्र, इतिहासः स्वरूप एवं सिद्धांत, जयपुर, 1991, पृष्ठ 60
2 . प्रसाद, ईश्वरी, शर्मा, शैलेन्द्र, प्राचीन भारतीय संस्कृति, कला, राजनीति, धर्म, दर्शन, पृष्ठ 720–21
3 . वही वही पृष्ठ 720
4 . विष्णुपुराण, पद्मपुराण, स्कन्दपुराण, मत्स्यपुराण, वायुपुराण, शिवपुराण आदि
5 . पाण्डे गोविन्द चन्द, वही, पृष्ठ 57
6 . गीता, 4,7–8
7 . पाण्डे, गोविन्द चन्द, वही, पृष्ठ 57–58
8 . ऋग्वेद, 6 / 4 / 11
9 . मिश्र, इन्दुमति, प्रतिमा विज्ञान (वैष्णव पुराणों के आधार पर) भोपाल, 1987, पृष्ठ 185
10. पुलासकर, स्टडीज इन द एपिक्स एण्ड पुराणाज़, बाम्बे, 1955 पृष्ठ 11
11. वही वही पृष्ठ 12
12. मिश्र, इन्दुमति, वही, पृष्ठ 190
13. विष्णु पुराण, अग्निपुराण, कल्कि पुराण आदि
14. गुप्त, गोपाल जी, हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ, दिल्ली, 2011, पृष्ठ 180
15. रामायण, 2 / 100 / 68
16. गुप्त गोपाल जी, हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ, दिल्ली, 2011, पृष्ठ 131
17. रामायण, 6 / 117 / 32
18. रामायण, 1 / 2 / 36–37
19. वर्डवुड, जी०, सी०, एम०, द इण्डस्ट्रियल आर्ट आफ़ इण्डिया, वाल्यूम 1, पृष्ठ 32–33
20. मिश्र, इन्दुमति. वही पृष्ठ 216
21. गुप्त गोपाल जी, वही, पृष्ठ 132
22. गीता 2 / 47
23. गुप्त, गोपाल जी, वही, पृष्ठ 126
24. अग्निपुराण, 16,1–4; 49, 8
25. भविष्य पुराण, 3 / 1 / 6 / 36–40; 3 / 1 / 6 / 42; 4 / 2 / 27–28
26. लिंग पुराण, 2 / 48 / 31–32
27. वराह पुराण, 4 / 2
28. गरुड़ पुराण 2 / 20 / 31
29. उपर्युक्त संदर्भ 24–28

30. डॉ० सुरेन्द्र अज्ञात, पुराणों में बुद्ध, दिल्ली, 2012 पृष्ठ 42
31. विल्किन्स, वी० जे०, हिन्दू माइथोलोजी, पृष्ठ 227
32. कल्कि पुराण, 2,28
33. वही
34. विष्णु पुराण पअए 24.98
35. पाण्डे, गोविन्द चन्द, वही, पृष्ठ 58
36. गीता, 10.8
37. पाठक, विशुद्धानन्द, उत्तर प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन लखनऊ 2007,पृष्ठ 4
38. पाण्डे, गोविन्द चन्द, वही, पृष्ठ 59
39. भागवत् पुराण, 1.16.20
40. पाण्डे, गोविन्द चन्द, वही, पृष्ठ 58
41. वही वही वही

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org